विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	बकरी पालन से लाभ	01
2.	इतिहास	01
3.	बकरी की नस्लें	02
4.	बकरी की सामान्य जानकारियाँ	04
5.	बकरियों के कोठे या बाड़े का रखरखाव	05
6.	बकरियों का पोषण	06
7.	नये आने वाले बकरे – बकरियों की देखभाल	11
8.	बकरियों में प्रजनन व नस्ल सुधार	11
9.	गाभिन बकरी का रखरखाव	14
10.	नवजात बच्चों की देखभाल	15
11.	बीमार पशु की पहचान	16
12.	बकरियों के रोग एवं बचाव	16
13.	बकरियों के अन्य रोग	19
14.	बीमारियों से बचाव	22
15.	टीकाकरण	23

संकलनकर्ता:–

डॉ. वाय.एन. शुक्ला, डॉ. के.के. श्रीवास्तव, डॉ. मेरी. बी. जॉन,
डॉ. आर. सी. रामटेके, डॉ. उपासना साहू, डॉ. अंजू शर्मा,
डॉ नीतू गौरड़िया, डॉ. गौतम राय, डॉ. सुनीता राय,
डॉ. एम.पी. सरसींहा एवं डॉ. निशा जैन

सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र महासमुन्द–493445

संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवायें प्रांगण, जी. ई. रोड रायपुर–492001

दूरभाष : 0771–2424961, फैक्स 0771–2424961

(राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के सौजन्य से)

मंगल सिंह यादव, रायगढ़

कन्हैया लाल यादव, रायपुर

बुध राम ध्रुव, धमतरी

मंगल राम, सरगुजा

1. बकरी पालन से लाभ

गरीब की गाय

1. बकरी को गरीब की गाय कहा जाता है ।
2. बकरियों को कहीं पर भी छोटी सी जगह पर रख सकते है।
3. खाने व खिलाने का खर्च कम से कम आता है।
4. दूध पौष्टिक एवं आसानी से पचने वाला होता है।
5. बकरी का मांस प्रोटीन से भरपूर होता है।
6. सूखे की स्थिति में भी जीवन यापन कर सकते है।
7. बकरी के बच्चों को बड़ा करके आसानी से कभी भी बेंचा जा सकता है बकरे एवं बकरी का मांस रू 150 से लेकर 180 रू प्रति किलो की दर से बिकता हैं।
8. मृत बकरी का चमड़ा भी बेचकर पैसा कमाया जा सकता है।

2. इतिहास

1. जुगाली करने वाले जानवरों में सबसे पहले बकरी पाली जाती थी।
2. बकरी पालन का केंद्र इराक, इरान, जोरडेन, टर्की और पैलेस्टीन था।
3. भारतीय और मध्य एशिया की बकरीयाँ मारखोर और बेजोएर से आई हैं।
4. पूरे विश्व में लगभग 102 descript जातियाँ पाई जाती हैं, जिसमें से 20 भारत,
   25 पाकिस्तान और 25 चीन में हैं।
5. भारत में कोई दुधारु और मांसवाली विशिष्ट बकरी नहीं है, जिनका दूध ज्यादा है, वें दूधारु, बाकी सभी मांसवाली कहलाती हैं।
6. **'मोहेर'** उत्पन्न करने वाली कोई भी बकरी भारत में नहीं हैं।

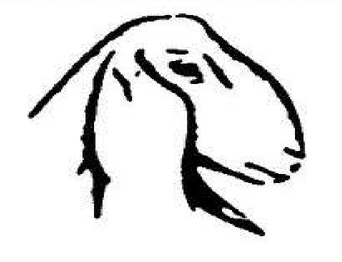

3. बकरी की नस्लें

क्र.	नस्ल	पाये जाने का स्थान	शरीर भार विशेषता	महत्वपूर्ण लक्षण
1	मारवाड़ी	इस नस्ल की बकरियां राजस्थान एवं गुजरात प्रदेशों में मिलती है।	द्विकाजी, नर 33कि.ग्रा, मादा 25कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	मध्यम आकार,शरीर मध्यम आकार शरीर लंबे बालों से ढका,काला रंग,चपटे कान, सींग छोटे नुकीले पीछे की ओर मुड़े हुए।
2	जमुनापारी	यह नस्ल उत्तरप्रदेश के इटावा व आगरा में मिलती है।	द्विकाजी नर 50–60कि.ग्रा, मादा 40–50कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	बड़ा आकार,कान 25–30 से.मी. लम्बे, रोमन नोज़ या उभरी हुई नाक, पिछली टांगों पर घने लंबे बाल, रंग मुख्यतः सफेद, शरीर पर काले भूरे रंग के धब्बे, लंबे थन।
3	पशमीना या चंगथंगी	यह नस्ल लददाख का चंगथंग क्षेत्र लाहौल व स्पीती में पाई जाती हैं	नर 20कि.ग्रा, मादा 19.8कि.ग्रा, ऊन व मांस के लिए उपयुक्त पश्मीना उत्पादन प्रति बकरी 215 ग्राम	रंग सफेद पर काला/भूरा भी, कान लंबे लटके हुऐ, सींग अर्द्धवृत्ताकार लंबे बाहर की ओर, चेहरा बालों से ढका।
4	चेगू	पर्वतीय जिले उत्तर काशी, चमोली, पिथौरागढ़ उत्तराखंड राज्य में	नर 36कि.ग्रा, मादा 25कि.ग्रा, ऊन व मांस के लिए उपयुक्त पश्मीना उत्पादन प्रति बकरी 120 ग्राम	मध्यम आकार, रंग सफेदी लिए भूरा लाल, सींग ऊपर की ओर उठे घुमावदार।
5	ब्लेक बेंगाल	इसके मिलने का स्थान पश्चिम बंगाल व आसाम है।	नर 30कि.ग्रा, मादा 20कि.ग्रा, मांस के उपयुक्त	कद छोटा, रंग काला/भूरा, कान छोटे व चपटे, सींग लिए उपर की ओर उठे हुए, कंधा और पिछला भाग समान ऊंचाई के, छाती चौड़ी।

6	बारबरी	इस नस्ल की बकरियां उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान में पाई जाती है।	दुधारू, नर 40कि.ग्रा, मादा 24कि.ग्रा, दूध1.30–2.00कि. ग्राम	छोटा कद, छोटे कान, छोटे सींग, सीधी नाक,रंग ज्यादातर सफेद व भूरा, शरीर पर छोटे–2 बाल, पिछला हिस्सा भारी, अयन पूर्णतः विकसित, घर में रखकर पालने में उपयुक्त।
7	बीटल	यह नस्ल पंजाब एवं हरियाणा में पाई जाती है।	द्विकाजी, नर 50–60कि.ग्रा, मादा 40–50कि.ग्रा,	बड़ा आकार, काला भूरा रंग, जमुनापारी से मिलती –जुलती, लंबे कान,उभरी नाक, सींग पिछे की ओर मुड़े हुए घुमावदार।
8	मेहसाना	इस नस्ल की बकरियां गुजरात के मेहसांना प्रांत में मिलती है।	द्विकाजी, नर 36कि.ग्रा, मादा 32कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	शरीर मध्यम आकार, काला रंग, कान सफेद पत्ती की तरह गिरे हुए तथा जड़ के पास सफेद धब्बे, सिंग हल्के पिछे की ओर मुड़े हुए।
9	गंजम	ओडिसा राज्य के गंजाम व कोरापुट जिले में पाया जाता है	द्विकाजी, नर 44कि.ग्रा, मादा 31.5कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	कद ऊँचा, रंग काला/भूरा/धब्बेदार, कान मध्यम आकार, सींग लम्बे व उपर की ओर उठे हुए।
10	उस्मानाबादी	यह नस्ल महाराष्ट्र के उस्मानाबाद प्रांत में पाई जाती है।	नर 40कि.ग्रा, मादा 35कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	शरीर मध्यम आकार, काला रंग,
11	अल्पाइन	फ्रांस देश की आल्पस पर्वत श्रृंखला	दुधारू, नर 65कि.ग्रा, मादा 60कि.ग्रा, दूध 0.90–1.30 कि.ग्रा,	औसत आकार, रंग सफेद काला,
12	टोगेनबर्ग	स्विटज़रलैण्ड	द्विकाजी, नर 65कि.ग्रा, मादा 50कि.ग्रा, मांस के लिए उपयुक्त	कद लंबा, रंग भूरा, सींग रहित जाति

4. बकरी की सामान्य जानकारियाँ

- बकरी – Goat
- वयस्क नर – Buck
- वयस्क मादा – Doe
- अवयस्क नर – Buckling
- अवयस्क मादा – Goatling
- बच्चा देने की क्रिया – Kidding
- आवाज़ – Bleat
- जन्म के समय भार – 0.94 – 3.54 कि.ग्रा.
- वयस्क बकरी का भार – 19 – 40 कि. ग्रा.
- शरीर का तापमान – 39 – 40 सेंटीग्रेड
- पल्स रेट – 55 से 75 प्रति मिनट
- श्वसन दर – 15 से 30 प्रति मिनट
- परिपक्वता उम्र – 4–5 महीना
- गर्भधारण का समय – सितंबर से फरवरी
- गर्मी या मद का समय – 12 से 48 घंटे
- गर्भकाल – 146– 154 दिन
- गुणसुत्रों की संख्या – 60
- प्रथम प्रजनन के लिए परिपक्वता उम्र – 12–18माह
- मद काल – 19 दिन
- बच्चा देने के बाद प्रजनन के लिए समय – 35 दिन बाद
- औसत जीवनकाल – 15 साल

दंत फॉर्मूला

deciduous I/C/P/M 0030/3130 = 20
Permanant I/C/P/M 0033/3133 = 32

दूध

बकरी का दूध आसानी से पचने वाला होता है बकरियों के दूध में जो पौष्टिक तत्व होते है वे इस प्रकार है।

वसा – 4.25 प्रतिशत
प्रोटीन – 3.52 प्रतिशत
लेक्टोज – 4.27 प्रतिशत
खनिज लवण – 0.86 प्रतिशत

अनुदान पर बकरा वितरण

योजना का उद्येश्य– बकरियों में नस्ल सुधार लाना। मांस और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि लाना।

हितग्राहियों के आर्थिक स्थिति में सुधार लाना।

योजना का विवरण– योजना के अन्तर्गत पात्र हितग्राहियों को उन्नत नस्ल का प्रजनन योग्य बकरा अनुदान पर प्रदाय किया जाता है। इकाई लागत – रू. 3000/–

पात्र हितग्राही– अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग बकरी पालक।

अनुदान/अंशदान राशि– योजनान्तर्गत प्रति इकाई 90 प्रतिशत राज्य शासन द्वारा अनुदान दिया जाता है तथा 10 प्रतिशत अंशदान राशि हितग्राही द्वारा जमा कराई जाती है।

5. बकरियों के कोठे या बाड़े का रखरखाव

1. बकरियों का बाड़ा, उनका घर आरामदायक होना चाहिए, जो उन्हें धूप, बरसात, ठंड जंगली जानवर व रोगों से बचायें।
2. उनके रहने के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए। एक युवा बकरी के लिए 10 वर्गफीट स्थान रहना चाहिए।
3. सर्दियों में बिछावन के लिए सूखी घास व बोरे के पर्दे लगाकर बचाव करना चाहिए।
6. बाड़े का फर्श समतल, साफ–सुथरा होना चाहिए।
7. छत, घास–फूस, पैरा, एसबेसटास या खपरैल की हो सकती है।
8. शुद्ध हवा का आवागमन अच्छा होना चाहिए, ताकि पेशाब, गोबर की बदबू ना रहे, जिससे सांस का रोग ना हो।

9. घर पूर्व, पश्चिम दिशा में होना चाहिए, ताकि सूरज की रोशनी घर पर पड़कर घर के अंदर पनपे, कीटाणुओं का नाश कर सकें।
10. नर–मादा(गाभिन व दुधारू) मेमनों एवं बीमार बकरियों का अलग–अलग रखने हेतु छोटे–छोटे बाड़े तैयार करना चाहिए।
11. नियमित समय पर बाड़े की साफ–सफाई फिनाईल से धुलाई करते रहना चाहिए।

कोठे के अंदर लगने वाली सामग्री –

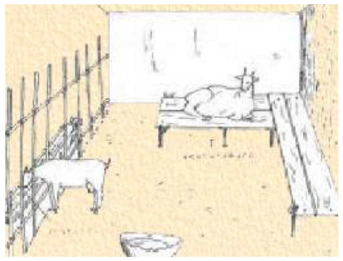

खाने के लिए बर्तन – ऊपर रखना चाहिए, क्योंकि बकरियां ऊपर पैर रखकर गर्दन ऊंची करके खाना पसंद करती है। खाने की कमी न हो, इस प्रकार बर्तनों व खाद्यान्नों की योजना बनानी चाहिए।

पानी के बर्तन – अस्वच्छ पानी से संक्रामक रोग हो सकते हैं। अतः पानी कीटाणु नाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए। पानी, खाने के बर्तन रोज साफ होने चाहिए।

हर तीन महिने में ध्यान मे रखने योग्य बातें :–

1. फिनाइल या इसके जैसा कीटाणु नाशक छिड़ककर बकरियों एवं उनके के बच्चों के कोठे को कीटाणु रहित करना चाहिए।
2. कोठे के जमीन पर चूना छिड़कना चाहिए।
3. कोठे के दीवार पर चूने से पुताई करना चाहिए।
4. अंतः एवं बाह्य परजीवियों का नाश करने के लिए समय–समय पर बकरियों में दवाई देनी चाहिए।
5. कोठे की मिट्टी साल में एक बार निकालना व बदलना चाहिए। ऐसा करने से परजीवियों के कारण होने वाले रोगों से बचाव हो सकता है।

6. बकरियों का पोषण

बकरियों के पेट के चार भाग होते है जिनके नाम है रूमेन, रेटीकुलम ,ओमेसम एवं एवोमेसम। बकरी जुगाली करने वाली पशु है जो घास व कृषि अवशेष जो कि मनुष्य उपभोग नहीं करता उसे दूध व मांस के रूप में तब्दील करते है । बकरी सामने के पैर को खडे करके ब्राउसिंग करती है। बकरियों को हमेशा खाने की आदत होती है। सामान्यतः बकरियां एक दिन में साढ़े तीन से लेकर चार किलो तक हरा चारा खाती है।

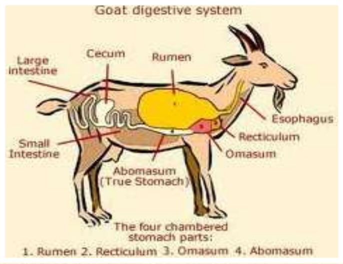

बकरियो को हरा चारा खिलाने से दाने की बचत की जा सकती है ।आमतौर पर यह माना जाता है कि बकरी द्वारा चरे जाने पर पौधों की बाढ़ रूक जाती है, यह धारणा गलत है, क्योकि बकरियों किसी पौधे को पूरी तरह से नहीं चरती बल्कि केवल कुछ पत्तियों ही चुनकर खाती है। इसमें पौधे की शाखाओं की सामान्य से अधिक वृद्धि होती है। कुछ क्षेत्रों में तो चने के खेतों से बकरियों को चरने के लिए बकायदा आमंत्रित किया जाता है, ताकि अधिक से अधिक शाखाओं का फैलाव हो तथा चना उत्पादन में वृद्धि की जा सकें।

ब्राउसिंग

सावधानियाँ –

1. एक ही चारागाह में बकरियों को ज्यादा समय तक चरने नहीं देना चाहिए, ऐसा करने से उन्हें कृमि रोग हो सकता है।
2. बकरियां ठंड और बरसात सहन नहीं कर पाती, अतः अधिक ठंड में धूप के समय चरने के लिए भेजना चाहिए। बरसात में गीली जगह, दलदल में चराई नहीं कराना चाहिए।
3. बीमार बकरी को चरने नहीं भेजना चाहिए।
4. गर्भावस्था के अंतिम दो सप्ताह व बच्चा जनने के दो सप्ताह तक चरने नहीं भेजना चाहिए।
5. नियंत्रित प्रजनन के लिए बकरी व बकरे को साथ में चरने नहीं भेजना चाहिए या उन्नत नस्ल के बकरों को साथ भेजना चाहिए।
6. साधारणतः 100 बकरियों को चराने के लिए एक आदमी पर्याप्त होता है।
7. बकरियों को चराने के लिये छोड़ना बहुत जरूरी है। उनको हर दिन 6 से 7 घंटा चरायें।
8. हर रोज बकरी जाने के बाद गोठे की सफाई करें।
9. जहां बकरियां को चरने के लिये छोड़े उस जगह को पहले से देखकर निश्चित करने कि वहां बकरी के चरने के लिये पर्याप्त चारा हो।
10. बकरियां और बड़े जानवर साथ–साथ न चरायें।

11. बकरियां को छोड़ने से पहले दाने की आधी मात्रा खिलायें और बकरियां वापस आने के बाद आधी मात्रा दें।

12. जिन बकरों का वजन कम हो, और जिनकी बाढ बराबर न हो। ऐसे बकरों का अपने पशु चिकित्सक के सहायता से खस्सी करवायें।

13. बरसात के दिनों में बकरियों को सूखा चारा जैसे चना कुटार, तुवर का कुटार, 400 से 500 ग्राम प्रति बकरी के हिसाब से खाने के लिये दें।

बकरियों का पोषण प्रबंधन – बकरियों के चरने एवं खान–पान का व्यवहार अन्य पशुओं की तुलना में अति विशिष्ट होती है। मुख की विशिष्टता बनावट उसे कांटेदार पत्तियां चरने में मदद करती है। बकरियां खाने में बड़ी नखरेवाली होती है। जो चारा एक बकरी को पसंद है वह दूसरी को नापसंद हो सकता है। पैरों द्वारा रौंदा गया मिट्टी लगा चारा खाने के बजाए वे भूखी रहना पसंद करती है। अन्य पशुओं के विपरित बकरियां कम नमी युक्त चारे पर आश्रित रहना पसंद करती है। बकरियों का खान–पान धीरे–धीरे बदलना चाहिए। अधिक दुध व मांस उत्पादन हेतु दुधारू,गाभिन बच्चे तथा प्रजनन के काम आने वाले बकरों आदि को उनके वजन व उत्पादन के अुनसार संतुलित दाना–चारा तथा अन्य पोषक तत्व के साथ उचित मात्रा मे खनिज लवण नियमित रूप से देना चाहिए।

तालिका 1: बकरियों द्वारा पसंद किये जाने वाले दलहनी व अदलहनी चारे।

क्र.	चारे का किस्म	दलहनी चारे	अदलहनी चारे
1.	सूखे चारे	भूसा, चना, मटर, अरहर, मूंग, उड़द, ग्वार, सेम, मटर व सनई	भूसा : गेंहू, जौ व जई कड़बी : ज्वार, बाजरा व मक्का हे: सूखी घास
2.	हरे चारे	बरसीम, लुसर्न, मटर, लोबिया, ग्वार, स्टाइलो व अन्य नैपियर, चारागाह दलहन	ज्वार, मक्का, बाजरा, मक्काचरी, पैरा, घास, जई व मानसूनी घासें

तालिका 2: एक वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए दाना मिश्रण का संगठन।

क्र.	खाद्य पदार्थ	भाग
1	मक्का का दाना	47
2	मुंगफली की खली	30
3	गेंहू की चोकर	20
4	खनिज मिश्रण	1.5
5.	साधारण नमक	1.5
	योग–	**100**

तालिका 3 : वयस्क बकरियों के लिए दाना मिश्रण का संगठन।

क्र.	खाद्य पदार्थ	भाग
सगठन 1:		
1.	जौ या मक्का या ज्वार या बाजरा	32
2.	खली (मुंगफली/अलसी/तिल/सूरजमुखी की)	30
3.	गेंहू या चावल की चोकर	20
4.	दाल चुनी	15
5.	खनिज मिश्रण	1.5
6	साधारण नमक	1.5
	योग	**100**
संगठन 2:		
1	सूखी नीम की पत्तियां	30
2	दाना मिश्रण	70
	योग	**100**

तालिका 4 : बकरी के बच्चों के लिए उपयोगी दानों का भौतिक संगठन तथा उनकी पोषक गुणवत्ता

क्रम संख्या	खाद्य पदार्थ	अनुपतिक मात्रा		
		फामुला–01	फार्मुला –02	फार्मुला–03
1.	मक्का का दाना	40	–	12
2.	जौ दाना	7	20	–
3.	बाजरा	–	20	10
4.	मुंगफली की खली	20	–	–
5	तिल की खली	15	20	23
6.	अलसी की खली	–	15	11
7.	गेंहू की चोकर	15	10	10
8.	चना का चोकर	07	–	26
9.	अरहर की चूनी	–	–	26
10	खनिज मिश्रण	02	02	02
11	साधारण नमक	01	01	01
पोषक तत्व				
प्रोटीन		19.03	20.71	21.41
कुल पाचक तत्व		76.94	74.80	66.12

तालिका 5 : बकरी के बच्चों में अपेक्षित शारीरिक वृद्धि के अनुसार दूध तथा दाने की दैनिक आवश्यकता।

आयु	प्रतिदिन अपेक्षित शारीरिक वृद्धि					
	150 ग्राम1		100 ग्राम2		50 ग्राम3	
	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा
जन्म के 15 दिन	500 ग्राम	–	400 ग्राम	–	200 ग्राम	–
15 दिन से 1 माह	800 ग्राम	120.0 ग्राम	600 ग्राम	75.00 ग्राम	300 ग्राम	40.0 ग्राम
1 से 2 माह	700 ग्राम	175.0 ग्राम	500 ग्राम	110.0ग्राम	260.ग्राम	60.0ग्राम
2 से 3 माह	400 ग्राम	300.ग्राम	300 ग्राम	200.0ग्राम	150.00ग्राम	100.0ग्राम

1. जन्म के समय शारीरिक भार : 2.500 कि.ग्रा.से अधिक।
2 जन्म के समय शारीरिक भार : 1.5 से 2.5 कि.ग्रा.तक।
3 जन्म के समय शारीरिक भार : 1.5 कि.ग्रा.तक।

तालिका 6 – 4.30 कि.ग्रा. भार वाली बकरी की दैनिक आहार की आवश्यकता।

क्र.	खाद्य पदार्थ	दैनिक आवश्कता (ग्राम)	उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा(ग्राम)		अनुमानित कीमत (रूपये)
			शुष्क पदार्थ	प्रोटीन	
1	दाना	200.00	185.0	37.0	1.40
2	हरा चारा	500.0	1560.0	15.0	0.50
3	सूखा चारा	500.0	475.0	15.0	1.50
	योग		**810.0**	**67.0**	**3.40**

7. नये आने वाले बकरे – बकरियों की देखभाल

1. बकरियों के आने के बाद में उनको आराम से गाड़ी से उतारें।
2. दो से तीन घंटा उनको आराम करने दें।
3. उसके बाद उनको ताजा स्वच्छ पानी पिलायें।
4. हरा चारा उनको खाने के लिये दें।
5. निमोनिया बीमारी से बचाने के लिये अपने पशु चिकित्सक की मद्द से उन्हें टेरामायसिन के इंजेक्शन सात दिन तक लगवाये यह बहुत आवश्यक है।
6. टेरामायसिन की खुराक 10 मिली ग्राम प्रति किलो के हिसाब से दें।
7. दूसरे दिन से उनको चरने के लिये छोड़ें और प्रतिदिन 6 से 7 घंटा चरायें।
8. नये आने वाले बकरियों को कृमिनाशक दवाई पिलाएं और टीकाकरण अपने पशु चिकित्सक की मद्द से करवायें।
9. नये आने वाले जानवरों को पुराने जानवरों से 21 दिन तक अलग रखें।

8. बकरियों में प्रजनन व नस्ल सुधार

1. जलवायु के अनुरूप के उपयुक्त नस्ल का चुनाव।
2. बकरियों में नियंत्रित गर्भधारण करनी चाहिये। उसके निये नर और मादा को अलग–अलग रखें।
3. हर सुबह बकरियों के झुंड में बकरा छोड़े और जो बकरी गर्मी में हो उसे अलग करने बकरा लगायें। प्रतिदिन एक बकरे से दो से तीन बकरियां लगवाये।

4. बकरा लगाने के बाद नियमित रूप से बकरी गाभिन है या नहीं इसकी जांच करें।
5. गाभिन बकरी को 300 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से दाना खिलाये। ये दाना बाज़ार में मिलता है। उससे बच्चे स्वस्थ और सुदृढ़ होते है।

6. जब तक बकरे का इस्तेमाल प्रजनन के लिये होता है। जब तक उसे प्रतिदिन 300 ग्राम दाना खिलायें।
7. हर तीसरे साल प्रजनन के लिये प्रयोग किया गया बकरा बदलें।
8. प्रसव पश्चात दो माह के अंदर बकरी गर्मी पर आ जाती है।इसकी नियमित रूप से जांच करें।
9. जिन बकरियों का वजन कम हो ऐसी बकरियों को गाभिन न करवायें।
10. एक बकरे से 45–50 बकरियों का रेतन करना उचित होता है, इसी अनुपात में बकरा–बकरी रखें।
11. बकरी डेढ़ वर्ष में दो बार बच्चे देती है।
12. प्रजनन योग्य क्षमता की आयु बकरियों में 12 माह तथा बकरों में 1–2 वर्ष होती है। पर बकरी व मेमनों की स्वास्थ्य की दृष्टि से बकरी को 15 माह के पहले गर्भधारण नहीं करवाना चाहिए।
13. बकरियों के लिए गर्भावस्था का समय चैत –जेठ (अप्रैल–जून) एवं भादो–कार्तिक (सितम्बर–नवम्बर) उचित माना जाता है। किन्तु पौष्टिक आहार देने पर बकरी वर्ष भर गर्मी में आती रहती है।
14. नियमित ऋतु काल 18–20 दिन का होता है। ऋतुकाल में ताव में लक्षण कुछ घंटे से लेकर 2–3 दिन तक दिखाई देते हे।
15. फलदायी समागम समय 6–20 घंटे तक ही होता है।

बकरी में गर्मी के लक्षण

1. बकरी सुस्त, बेचैन रहती है, पूंछ उठाकर विशेष प्रकार की आवाज करती है, खाना–पीना कम कर देती है।
2. अचानक दूध में कमी आ जाती है। दूसरी बकरियों पर चढ़ने की कोशिश करती है।

3. योनि द्वार गुलाबी तथा सूजा लगता है।
4. बकरा गर्मी के लक्षणों वाली बकरी की पहचान जल्दी कर लेता है।

नस्ल सुधार

उन्नत नस्ल का बकरा

1. देशी नस्ल – तीस किलो वजन,
   आधा किलो दूध–देशी नर x देशी मादा
   तीस किलो वजन, आधा किलो दूध
   एक बच्चा
2. उन्नत नस्ल नर –पचास किलो वजन
   देशी मादा –आधा किलो दूध –एक बच्चा
   उन्नत नस्ल नर x देशी मादा
   पचास किलो वजन, 1.5 किलो दूध –2 बच्चे

तरीका

1. निकृष्ट बकरों का बधियाकरण करवायें ।
2. उन्नत नस्ल के बकरों से प्रजनन करवायें ।
3. हिस्ट पुष्ट, स्वस्थ तथा ज्यादा दूध देने वाली बकरियों का उन्नत नस्ल के बकरो से प्रजनन करवायें ।
4. एक बार में एक से अधिक बच्चे देने वाली बकरियों को प्रजनन हेतु उपयोग में लाएं।

बधियाकरण

1. नर बकरों को बरडिज़ो कैस्ट्रेटर से नसबंदी करवाना बधियाकरण कहलाता है।
2. बकरी पालन में तीस बकरियों के पीछे एक नर बकरा रखा जाना चाहियें ।

बधियाकरण से लाभ निम्नानुसार है –

1. झुंड में अनावश्यक प्रजनन को रोकता है।
2. पशु के मांस में बढोत्तरी होती है। जिससे अधिक कीमत प्राप्त होती है।
3. नर बकरों की खास गंध से छुटकारा मिलता है।

4. मांस की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।
5. चमड़ी का अधिक दाम मिलता है।
6. बधियाकृत नर झुंड से अलग नहीं भागते ।

बरडिजो केस्ट्रेटर से छह माह के ऊपर के नर बकरों का बधियाकरण करना चाहिये एवं बधियाकरण करने के उपरांत टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये। इससे संक्रमण कम होता है।

9. गाभिन बकरी का रखरखाव

1. गर्भावस्था में बकरी सुस्त, बेचैन रहती है, पूंछ उठाकर विशेष प्रकार की आवाज करती है, खाना–पीना कम कर देती है।

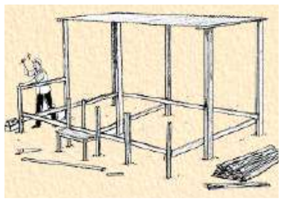

2. जमीन पर घास का बिछौना तैयार करना चाहिए।
3. बाहर चारागाह में रहने का समय धीरे–धीरे कम करके 2–3 घण्टे कर देना चाहिए।
4. उत्तम प्रकार की हरी घास उपलब्ध कराना चाहिए।
5. मिनरल मिक्चर व विटामिन देना चाहिए।
6. स्वच्छ पानी हमेशा उपलब्ध होना चाहिए।
7. गाभिन बकरी को जो एक दो दिन जनने वाली हो उसे संभवता चरने के लिये न छोड़े।
8. बकरी के प्रसव में कठिनाई हो रही हो तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

बकरियों के जनने के कोठे की व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। इस कोठे को कीटाणु रहित करना आवश्यक है, अन्यथा नवजात शिशुओं में रोग की आशंका बनी रहती है। जल्दी ही जनने वाली बकरियों की विशेष व्यवस्था करनी चाहिए। थोड़ी देर पहले बकरियों के पिछले हिस्से के बाल निकाल देने चाहिए व साबुन पानी से साफ कर देना चाहिए। घास या बोरे को जमीन पर बिछा देना चाहिए।

10. नवजात बच्चों की देखभाल

1. बच्चा पैदा होते ही उसका मुंह और नाक साफ करें।
2. पेट से एक इंच नीचे से उसकी नाल काटें और उसे धागा बांधे टिंचर लगायें।
3. नवजात बच्चे के खूर साफ करें और सामने का नरम भाग तोड़कर अलग करें इससे बच्चे को खड़े होने में सुविधा होती है।
4. नवजात बच्चे को बकरी के पास रखें और उसे चाटने दें इससे बच्चे के बदन में गरमी पैदा होती है।
5. बकरी का थन पोटाश के पानी से अच्छी तरह धोयें।
6. बच्चे को जितनी जल्दी हो सके बकरी का पहला दुध (खीस) पिलायें यह बहुत जरूरी है इससे बच्चे में बीमारी से लड़ने की क्षमता पैदा होती है।

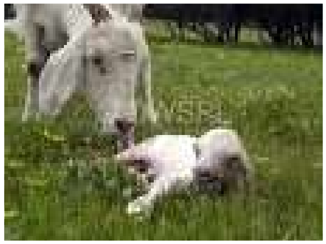

7. जब बच्चा पन्द्रह दिन का हो जाये तो उसे नरम हरा चारा और दाना (कन्सनट्रेट) थोड़ा खाने के लिये दें। इसकी मात्रा प्रतिदिन धीरे–धीरे बढ़ाये।
8. जब बच्चा तीन माह का हो जाये तो उसे दूध पिलाना बंद कर दें। इससे बकरी जल्दी दुबारा मांज पर आती है।
9. तीन माह का होने के बाद बच्चे को पहली बार कृमिनाशक दवाई पिलायें और उसका टीकाकरण करें इसके लिये अपने पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
10. तीन माह का होने के बाद बच्चे को चरने के लिये छोड़े।
11. हर महिने में एक बार बच्चों का वजन करें इससे उनके वजन में होने वाले बढ़ोत्री की जानकारी मिलती है।

11. बीमार पशु की पहचान

1. बकरी खाना पीना छोड़ देती है।
2. बकरी हर समय सुस्त रहती है।
3. थूथन सूख जाती है।
4. झुंड में सबसे पीछे चलती है।
5. बकरियों का वजन दिन प्रतिदिन घटता जाता हैं
6. बकरियां कमजोर दिखाई देती है।
7. शरीर की चमड़ी तथा बाल झड़ना एवं चमड़ी की चमक कम हो जाती है।
8. बकरियां दांत किटकिटाती है।
9. दूध उत्पादन घट जाता है।
10. दस्त तथा कमजोरी एवं अन्य बीमारियों से ग्रसित हो जाती है।

12. बकरियों के रोग एवं बचाव

रोग होने के पश्चात उपचार करने से अच्छा है कि रोग न होने देने के उपायों पर पूरा ध्यान रखा जाये –

क्र.	बीमारी का नाम	बीमारी का स्त्रोत	संकामण काल	लक्षण	बचाव एवं उपचार
1	बकरी चेचक	हवा द्वारा, छुआ छुत घाव व संक्रमित वस्तुओं द्वारा	2 – 7 दिन	तेज बुखार, आंख व नाक से स्त्राव आना तेज सांस चलना, खाना पीना छोड़ देना, त्वचा में लालिमा युक्त फफोले, जो कि कुछ समय बाद पुटिका या पपड़ी में बदल जाते है। 15–20 प्रतिशत मृत्यु दर।	प्रतिरोधक टीकाकरण, रोगी बकरियों को स्वस्थ्य बकरियों से अलग रखना एवं साफ सफाई रखना

2	कंटेजियस एक्थाइमा (मुहा)	छूत द्वारा, वर्ष भर होता है परंतु मुख्य रूप से गर्मी व बसंत ऋतु में	7 दिन	बच्चों को अधिक प्रभावित करता है, 70–80 प्रतिशत पशु प्रभावित हो सकते हैं। त्वचा विशेषकर मुंह व होठों पर लालिमा युक्त फफोले देखे जाते है तथा 3–4 सप्ताह में ठीक हो जाते हैं। कई बार फफोले तथा घाव मुंह तथा नाक में भीतर तक फैल जोत हैं। मृत्युदर कम है।	टीका उपलब्ध नहीं । साफ सफाई के उपाय कराना चाहिए घाव का उपचार कराना चाहिए।
3	भूखमरी (एफएमडी)	माहामारी, छुआछुत का रोग है।	3 – 4 दिन	तेज बुखार, उत्पादन में कमी, मुंह से लार बहना, मुह के अंदर फफोले, घाव। इसी प्रकार के घाव खुरों के बीच में भी हो सकता है। जिसके कारण पशु लंगड़ाने लगता है।	स्वस्थ्य बकरियों को बीमार बकरियों से अलग रखें। मुंह के घावों में बोरो ग्लिसिरीन लगाये व पैरों के घाव को पोटेशियम परमेगनेट से साफ कर हिमेक्स महलहम लगाये। प्रतिजैविक औषधियां, विटामिन 'ए' के टीके तथा जिंक लवण भी उपयोगी है।
4	बकरी प्लेग (पीपीआर)	महामारी शत प्रतिशत मृत्यु दर, आंख को पानी, मलमूत्र, बलगम, सांस से तेजी से फैलता है।	3 – 5 दिन	तेज बुखार 106 डिग्री सेल्सियस तक, जीभ, तालू, होठ तथा मुंह के अंदर छाले पड़ना, दस्त, सर्दी, खांसी, सांस में तकलीफ, पेंचिस, गर्भपात, मृत्यु।सबसे अधिक यही रोग मृत्यु का कारण बनता है।	वार्षिक टीकाकरण, बाहर से लाये पशुओं को एक सप्ताह अलग रखे निरोग सिद्ध होने पर ही झुण्ड में मिलायें।

5	निमोनिया (सीसीपीपी)	फेफड़ो को प्रभावित करने वाला छूत का घातक रोग है। श्वास के द्वारा फैलता है।	6 – 10 दिन	शतप्रतिशत पशु प्रभावित होतो है। मृत्युदर 60–100 प्रतिशत है। खांसी, सांस लेने में तकलीफ, चलने में पिछड़ना, लंगड़ाहट, बुखार, मुंह से सांस लेना, जीभ निकालना, झागदार लार बहना।	सूखा नमी रहित आवास, संतुलित आहार, समय अवधि में कृमिनाशक दवापान वर्षा में चराई न कराये।
6	गलघोंटू	महामारी, संक्रमित आहार खाने से, श्वास द्वारा	2 दिन	तेज बुखाार, भूख न लगना, गले, गर्दन व जीभ पर सूजन, नांक, आंख व मुंह से पानी बहना, सांस लेने मे तकलीफ, घुर्र–घुर्र की आवाज निकलना। 12–14 घण्टे में मृत्यु	टीकाकरण, साफ – सफाई रखना, रोगी, पशु से अलग रखे।
7	पोंकनी या(ऐन्ट्रो टॉक्सीमिया) (आंत्र विषाक्त)	6–8 माह के मेमनों में पाया जाने वाला भयानक रोग है, ठंड के मौसम में अधिक होता है। आहार संक्रमण, अचानक उच्च प्रोटीन वाला आहार देना।	2 – 3 दिन	पेट फूलना, सांस लेने में तकलीफ, दस्त, लड़खड़ाना, मुंह से झाग आना, जबड़ों का जकड़ना, पेटदर्द निःचेतना भी देखी जा सकती है।	टीकाकरण, बाडे में वर्ष में 3–4 बार चूने का छिड़काव अवश्य करें। नवजात शिशुओं को खीस अवश्य पिलायें।
8	कॉक्सी डियोसिस या कुकड़िया रोग	बाड़े मे अस्वच्छता, दूषित आहार व पानी तथा आहार मे पौष्टिक तत्वों की कमी रोग फैलाने में सहायक	2 – 3 सप्ताह	रक्त मिश्रित दस्त, कमजोरी, 10 प्रतिशत मृत्यु दर।	साफ–सफाई, वयस्क व मेंमनों को अलग–अलग बाड़े में रखें, संख्या के अनुसार पर्याप्त जगह दें, बाड़ा सूखा रखें समय–समय पर जीवाणु नाशक दवा का छिड़काव करें।

13.बकरियों के अन्य रोग

1. **अफरा :–** पेट में गैस बनना, पेट फुलना।

कारण :– संतुलित भोजन न खिलाने से। जरूरत से ज्यादा हरा चारा खिलाने से। सड़ा–गला बासी खाना देने से। गले पर दबाव पड़ने से।

लक्षण :– बकरी बेचैन होती है। सांस लेने में कठिनाई। बकरी की बायीं कोंख फूल जाती है। फूली हुई कोंख थपथपाने से ढोलक जैसी आवाज आती है।

रोकथाम :– बकरी को हमेशा नियमानुसार संतुलित भोजन देना चाहिए। हमेशा ताजा व स्वच्छ खुराक देना चाहिए। बकरी को गीली जगह पर नहीं चराना चाहिए।

इलाज / उपचार :– बकरी को खाना खिलाना बंद कर दें। बकरी का अगला पैर पिछले पैरों से ऊंचा रहें, ऐसे खड़ा रखें। तारपीन तेल 10 एम.एल. + मीठा तेल 20 ग्राम + हींग 05 ग्राम का घोल बनाकर पिलावे। हिमालय बत्तीस 15 ग्राम + 25 एम.एल. पानी पिलावे। पशु चिकित्सक की मदद लेनी चाहिए।

2. **मैगटस एवं संक्रमित घाव :–** जब बकरियों में किसी घाव की नियमित देख–रेख (ड्रेसिंग) नहीं होती है, तो गंदगी के कारण आकृष्ट होकर विशेष प्रजाति की मक्खियों द्वारा घाव में अण्डे देने तथा उनके लारवा में परिवर्तित होने के कारण मैगट घाव बन जाते हैं। ये लारवा (मेगट्स) बकरियों का रक्त तथा घाव में उत्पन्न मवाद या घाव के सड़े ऊतकों को खाते है। ऐसे घावों से खून, लाल द्रव्य निकलता रहता है। घाव में तारपीन का तेल लगाने से कीड़े मर जाते हैं। अन्य दवाओं में मेगोनिल भरकर घाव को रूई से बंद कर देते हैं तथा 5–6 घण्टे बाद रूई निकालने पर मरे हुए कीड़ों को चिमटी से निकाल देना चाहिए। घाव की नियमित ड्रेसिंग करते रहना भी आवश्यक है। ब्यूटोक्स या

एक्टोमिन नामक जैसी दवा का घोल (1:1000) घाव के अंदर डाल देने पर कीड़े आसानी से मर जाते है। यह सुनिश्चित करने के बाद कीड़े घाव के अंदर नहीं है तब घाव को एंटीसेप्टीक घोल(बीटाडीन घोल, पोटेशियम परमेगनेट) एंव टिंचर आयोडिन, पोवीडीन लोशन से साफ कर, जीवाणु नाशक मल्हम (लोरेक्शन, हीमेक्स) लगा देनी चाहिए। एंटीबायोटिक्स बेंजीथीन पेनिसिलिन की सुई लगाने से घाव जल्दी भर जाता है।

3. पेट की कीड़े :– बकरी के पेट, फेफड़े, लिवर में बहुत से कीड़े, घास/पत्तियों के साथ प्रवेश करते है। बकरियों के पेट में कीड़े उनके स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है। बकरियों में पेट के कीड़े छोटे बच्चों 6–8 माह तक की उम्र के बच्चों को ज्यादा होते हैं।

लक्षण :– भूख कम लगना, कमजोरी, पेट बड़ा होना, कमजोरी के कारण दूध न देना, वजन कम होना, खुश्क चमड़ी, दस्त होना, बालों का झड़ना, गले में सूजन, खून की कमी।

रोकथाम :–

1. बकरियों के निवास की साफ–सफाई रखना।
2. कृमिनाशक दवा द्वारा –
   - प्रथम बार एक माह की आयु में।
   - 3–6 माह तक मासिक।
   - व्यस्क–वर्षा ऋतु के प्रारंभ व अंत में।
3. सप्ताह में एक बार नीम की पत्तियां देने से भी कृमि का सफाया हो सकता है।

4. बकरियों में बाह्य परजीवी :– बाड़े में अधिक संख्या हो जाने से, चारागाह में पारस्परिक संपर्क बढ़ने से बकरियों में बाह्य परजीवियों का संक्रमण अक्सर देखा जाता है। जूँ, किलनी प्रकोप, खुजली या मेन्ज, बाह्य परजीवियों के कारण होने वाले रोग हैं।

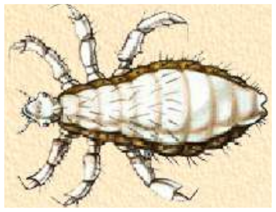

लक्षण :– त्वचा में जूँ, किलनी, मेन्ज के प्रकोप से खुजली होती है। चमड़ी मोटी, रक्ताल्पता, बाल झड़ना, दीवार से रगड़ने के कारण शरीर पर घाव हो सकते हैं। किलनी कुछ अन्य रोगों को फैलाने में संवाहक का काम करते हैं। कभी–कभी किलनी कुछ विषैले पदार्थ छोंड़ते हैं, जिससे पिछले पैरों में लकवा भी मार जाता है।

रोकथाम :– रोगी पशु को तत्काल स्वस्थ जानवर से दूर रखें। बाड़े में भीड़ कम करें। बाड़े में स्वच्छता रखें। बाड़े/घर की दीवार तथा किवाड़ पर आधा लीटर कैरोसीन तथा 10 लीटर पानी का घोल अथवा 5 प्रतिशत डीडीटी का घोल छिड़कना चाहिए। यह घोल प्रत्येक माह छिड़कना चाहिए, जब तक बाह्यपरजीवी का प्रकोप खत्म न हो जाए।

बचाव के उपाय :– अंतः परजीवियों से बचाव के लिए निम्न में से कोई एक दवा वर्षाकाल के प्रारंभ तथा समाप्ति पर पिलायें।

ऐलबेंडाजोल	10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीरभार
फैंनबेंडाजोल	7 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीरभार
ट्राइक्लाबेंडाजोल	10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीरभार

बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए निम्न में से कोई एक दवा बकरियों पर छिड़काव कर उनको स्नान कराने के लिए उपयोग में लाई जा सकती है।

मैलाथियौन	0.5–0.8 प्रतिशत घोल
साइपरमैथ्रिन	1 मिलीलीटर प्रति लीटर में
डेल्टामैथ्रिन	1 मिलीलीटर प्रति लीटर में
ब्यूटाक्स	3 मिलीलीटर प्रति लीटर में

कौक्सीडियोसिस रोग के उपचार हेतु एम्प्रोलियम 50 मिलीग्राम प्रति किलाग्राम शरीरभार (लगातार 5 दिन तक)

14. बीमारियों से बचाव

1. प्रतिदिन सुबह बकरियों की जांच करें जो बकरी बीमार हो उसे बाकी बकरियों से अलग करें। अन्यथा दूसरी बकरियों में रोग फैलने की संभावना रहती है।
2. बीमार बकरी को चरने के लिये ना छोड़े और अपने पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
3. हर तीन महिने में बकरियों को कृमिनाशक दवाई पिलायें विशेषतः बरसात के पहले और बरसात के बाद यह बहुत आवश्यक है। इसके लिये अपने पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
4. हर चार महिने में बकरियों को खुजली से बचाने के लिये कृमिनाशक दवाई से नहलायें। विशेषतः बरसात के पहले और बरसात के बाद इसके लिये अपने पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
5. बकरियों के टीकाकरण के लिये साथ में दिया गया स्वास्थवक्ता देखें।
6. बरसात के दिनों में बकरियों के कोठे की जमीन पर चूने का छिड़काव करें।
7. हर तीन महिने में फिनाईल अथवा उत्तम कृमिनाशक का बकरी के कोठे में छिड़काव करें।
8. हर तीन महिने में कोठे की दीवारों पर चूने से पुताई करें।
9. गाभिन बकरियों को एंटेरोटॉक्सिसीमियां का टीका लगावायें। पंद्रह दिन के बाद दुबारा लगायें यह बहुत आवश्यक है। इसके लिये अपने पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
10. बकरियों का नियमित रूप से टीकाकरण करवायें और कृमिनाशक दवाई पिलायें और अपने पशु चिकित्सक से संपर्क बनाये रखें।

15. टीकाकरण

क्र.	रोग का नाम	लक्षण	टीके की मात्रा	मार्ग	टीकाकरण का समय एवं रोग प्रतिरोधक अवधि
1	गलघोंटू एच.एस.	तेज बुखार ,गले में सूजन श्वांस लेने एवं निगलने में तकलीफ एवं निमोनिया जैसे लक्षण	पांच एम.एल.बडी बकरियों को एवं बच्चों को 2 से 2.5 एम.एल.	चमड़ी के नीचे	मई एवं जून के महीने में लगाना चाहिये। टीकाकरण की रोग प्रतिरोधक क्षमता छह माह है
2	खुर पका रोग या एफ. एम.डी.	तेज बुखार ,मुंह दांत एवं खुरों के बीच तथा त्वचा पर छाले पड़ना	बडी बकरियों में पांच एम.एल. तथा छह माह से उपर के बच्चों को दो से ढाई एम.एल. तक	मांस पेशी में	अगस्त माह में लगाया जाना चाहिये इसकी रोग प्रतिरोधक अवधि छह माह तक है अतः छह माह के बाद रिपीट करना चाहिये
3	एंटेरोटॉक्सीमिया	लड़खड़ा कर चलना सांस लेने में तकलीफ होना एवं अनियमित श्वांस से लेना तथा पेट फूलना एवं दांत किटकिटाना	पांच एम.एल. मांस पेशी में, गाभिन मादाओं को जनने तीन सप्ताह पूर्व टीका लगाना चाहिये	मांस पेशी में	साल में कभी भी लगाया जा सकता है इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता एक साल रहती है।
4	पी. पी. आर.	तेज बुखार ,मुंह दांत एवं खुरों के बीच तथा त्वचा पर छाले पडना	बडी बकरियों में एक एम.एल. तथा दो माह से नीचे के बच्चों को टीका नहीं लगाना चाहिए।	मांस पेशी में	मई एवं जून के महीने में लगाया जाना चाहिये इसकी रोग प्रतिरोधक अवधि एक साल अतः एक साल बाद रिपीट करना चाहिये